IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 09, Iss 03, 2020

वेदों में दार्शनिक विचार

डॉ. सुभाष चंद्र शास्त्री

सह आचार्य संस्कृत

राजकीय महाविद्यालय तिजारा (अलवर), राजस्थान

संक्षेप

वेदों में दार्शनिक विचार का विकास भारतीय साहित्य और धार्मिक तत्त्वों का महत्वपूर्ण हिस्सा है। वेदों में ब्राह्मण, आरण्यक, और उपनिषद् शृंगारित किए गए हैं, जिनमें विभिन्न दार्शनिक विचारों का समावेश है। ब्राह्मण भाग में, कर्मकाण्ड के माध्यम से मुक्ति की प्राप्ति के लिए धार्मिक कर्मों की महत्वपूर्णता पर बल दिया गया है। यहां यज्ञ, हवन, और पूजा के माध्यम से ब्राह्मण वर्ग को आत्मा का परमात्मा के साथ मिलन का आदान-प्रदान किया जाता है। आरण्यक भाग में, वन्दना, तपस्या, और योग के माध्यम से आत्मा की साधना पर अधिक बल दिया जाता है। यह विचार वेदान्त दर्शन की ओर प्रवृत्ति का प्रारम्भ है, जो आत्मा और परमात्मा के एकत्व को प्रमोट करता है। उपनिषद् में, दार्शनिक विचारों का और अधिक विकास होता है जैसे कि वेदान्त, न्याय, सांख्य, योग, और मीमांसा। इन दर्शनों में मानव जीवन, ज्ञान, और मोक्ष के सिद्धांतों पर गहरा अध्ययन किया जाता है। वेदों में दार्शनिक विचार का विकास एक नए और ऊँचे स्तर पर मानव सोच और ज्ञान की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

परिचय

वेद का अर्थ है 'ज्ञान', जिसका ऋषियों ने साक्षात्कार किया और शब्दों में बद्ध करके मन्त्ररूप में प्रकाशित किया। इसे भारतीय परंपरा में 'अपौरूषेय' माना जाता है, हालांकि न्याय दर्शन इन्हें ईश्वर सृष्टि मानकर 'पौरुषेय' बताता है। इन्हें 'बुति' के रूप में प्रतिष्ठित माना जाता है और इन्हें अनादिकाल से अलिखित रूप में सुरक्षित रहा है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 09, Iss 03, 2020

वेद को ईश्वर की वाणी माना जाता है, इसलिए वेदों को परम सत्य मानकर आस्तिक दर्शनों ने प्रमाण के रूप में स्वीकार किया है। वेद का अर्थ 'ज्ञान' है। दार्शनिक विचारों के स्रोत आरण्यक, उपनिषद्, वेद, तथा टीकाएँ हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों में यज्ञ आदि का अनुष्ठान होता है तथा इन ग्रंथों के आध्यात्मिक भागों में व्यक्ति को आत्मा का और परमात्मा के साथ मिलन की ओर बढ़ने के लिए मार्गदर्शन किया जाता है।

वेदों में दार्शनिक विचार का परिचय हमें भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टिकोण से समर्थन करता है। वेद भारतीय साहित्य के प्राचीनतम ग्रंथ माने जाते हैं और उनमें धार्मिक और दार्शनिक सिद्धांतों का समृद्धांत है। प्राचीन भारतीय समाज में वेदों को "श्रुति" कहा जाता है, जिसका अर्थ होता है 'श्रवण' या 'सुनना'। वेदों का आदिकाल प्रवृत्ति के समय में, जब गुरुकुलों में छात्र अपने गुरु के शिक्षा को श्रवण करते थे, इसी आधार पर इन्हें 'श्रुति' कहा गया है।

वेदों में ब्राह्मण, आरण्यक, और उपनिषद् तीनों भाग हैं, जो विभिन्न पहलुओं से भरे हुए हैं। ब्राह्मण भाग में कर्मकाण्ड का विवेचन है, जो विभिन्न यज्ञों और कर्मों के माध्यम से धार्मिक जीवन की मार्गदर्शन करता है। यहां यज्ञ, हवन, और पूजा के माध्यम से ब्राह्मण वर्ग को आत्मा का परमात्मा के साथ मिलन का आदान-प्रदान किया जाता है। आरण्यक भाग में, वन्दना, तपस्या, और योग के माध्यम से आत्मा की साधना पर अधिक बल दिया जाता है। इसमें यह बताया गया है कि समाज में अपने कर्तव्यों को निभाते हुए व्यक्ति कैसे आत्मा के मुक्ति की ओर बढ़ सकता है। यह धार्मिक साधना और आत्मा के परमात्मा के साथ मिलन की ऊँचाई को बोधित करता है।[1]

उपनिषद् में, दार्शनिक विचारों का और भी विकास होता है, जैसे कि वेदान्त, न्याय, सांख्य, योग, और मीमांसा। इन दर्शनों में मानव जीवन, ज्ञान, और मोक्ष के सिद्धांतों पर गहरा अध्ययन किया जाता है। वेदान्त दर्शन में आत्मा और परमात्मा के एकत्व को प्रमोट करने का प्रयास है, जबकि न्याय और सांख्य दर्शन तर्क और अनुमान के माध्यम से ज्ञान की

[1] ऋग्वेद 1-89-10

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 09, Iss 03, 2020

महत्वपूर्णता को प्रमोट करते हैं। वेदों में दार्शनिक विचार का विकास एक नए और ऊँचे स्तर पर मानव सोच और ज्ञान की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह संस्कृति और धर्म के लिए एक अद्वितीय स्रोत है जो आज भी हमें अपनी मूल्यशीलता और जीवन दर्शन की दिशा में मार्गदर्शन करता है।

भारतीय दार्शनिकों के बारे में टी एस एलियट ने कहा था .

भारतीय दार्शनिकों की सूक्ष्मताओं को देखते हुए यूरोप के अधिकांश महान दार्शनिक स्कूल के बच्चों जैसे लगते हैं।

वैदिक आख्यानों में शिक्षा दी गई है कि मानव समाज का सामूहिक कल्याण विश्व के मध्य तथा अभिवृद्धि के लिए होना चाहिए। भारतीय संस्कृति के अनुसार, मानव देवताओं से संबंधित हैं और मानव यज्ञों में देवताओं को आहुति प्रदान करके सामाजिक हित में योगदान करते हैं। देवता भी इस प्रयास को प्रसन्नता से देखकर मानव की इच्छाओं को पूरा करते हैं।[2]

वैदिक आख्यानों में, इंद्र और अश्विनी देवताओं के कथाएं इस सिद्धांत को स्पष्ट करती हैं। यजमान जो सोम रस का अर्पण करता है, उसे इंद्र प्रसन्न होते हैं और उसकी कामनाएं पूरी होती हैं। इंद्र अपने वज्र से वृत्रा दैत्य को मारकर नदी को प्रवाहित करता है, जिससे वृष्टि होती है और मानव तृप्त होते हैं। इस प्रकार, संसार में शान्ति बनी रहती है।

इस वैदिक सत्य को महाकवि कालिदास ने अपनी कविताओं में सुंदरता के साथ व्यक्त किया है।

प्रत्येक आख्यान मानव शिक्षा के लिए है और इसमें उदात्तता और तेजस्विता का प्रतिपादन है। आत्रोयी और कपाल के 8/91 आख्यान में नारी चरित्र का उदात्तता और तेजस्विता का स्पष्ट प्रस्तुतीकरण है। राजा त्र्यरुण-त्रौवृष्ण-वृषजों के 5/2 आख्यान, ताण्डङ्ब्रा 13/6/12,

[2] वही, 9-108-8

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 09, Iss 03, 2020

ग्विधन 12/52, बृहद्देवता 5/14-23 में वैदिक कालिक पुरोहित की महिमा और गरिमा का स्पष्ट रूप से साक्षरता किया गया है।

सोभरि और काण्व के 8/19 आख्यान, निरूत्तिफः 4/15, भाग 9/6 में सघाती की महिमा का प्रतिपादन है, जो सामूहिक प्रभाव और गौरव की कहानी को अद्वितीय रूप से दर्शाता है। उषसति चाक्रायण के आख्यान (छान्दोग्यः, प्रथ प्रपाठ खण्ड 10/11) में अन्न के सामूहिक प्रभाव और गौरव की महत्त्वपूर्ण कथा है।[3]

शुनःशेप आख्यान में देवता की अनुकम्पा का उज्ज्वल साक्षरता है, जिससे शुनःशेप अपनी रक्षा करने में समर्थ होता है। वसिष्ठ विश्वामित्रा आख्यान भी महिमा और सघाती का स्पष्ट रूप से प्रदर्शन करता है, जो विश्लेषण की कमी के कारण अनर्गल कल्पना का समर्थन करता है। इसमें वसिष्ठ और विश्वामित्रा के बीच मैत्रा और सहायकता की अद्वितीयता को उज्ज्वलता से प्रस्तुत किया गया है। यावाश्व-आत्रोय की कथा (ग् 5/61) भी गौरव, प्रेम महिमा, और कवि की साधना को सुंदर रीति से व्यक्त करती है।

'कृतानि यानि कर्माणि दैवतैमुनिभिस्तथा।

न चरेत्तानि ध्मात्मा श्रुत्वा चापि न कुत्सयेत्।।

अनमन्यैरुपालब्दे कीर्त्तितैश्च व्यतिक्रमैः।

पेशलं चानरूपच कर्तव्यं हितमात्मनः।।'

वेद न केवल भारतीय धरा के ही नहीं, बल्कि अखिल विश्व के प्राचीनतम अक्षय कोष माने जाते हैं, जो कि संसार की सभी विद्याओं के मूल स्रोत हैं। भारतीय परंपरा के अनुसार, वेद अपौरुषेय हैं, जिनका आविर्भाव सृष्टि के आरंभ में हुआ था। उस समय से लेकर आज तक, वेद मानव जीवन के कल्याण के लिए साधन बनकर उसे अनुप्राणित कर रहे हैं। वेदों में ज्ञान, विज्ञान, धर्म दर्शन, सदाचार, संस्कृति, सामाजिक और राजनीतिक जीवन से संबंधित

[3] ऋग्वेद 1-105-15

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 09, Iss 03, 2020

सभी विषय उपलब्ध हैं। आचार्य मनु का स्पष्ट कहना है, "स सर्वज्ञानमयो हि सः," अर्थात वेद में समस्त विद्याएं और धर्म नियमों का प्रतिपादन किया गया है, जो सम्पूर्ण ज्ञान का एक स्रोत हैं। इसी प्रकार, याज्ञवल्क्य स्मृति का वचन भी वेदों के महत्वपूर्ण स्थान को दर्शाता है।[4]

"स सर्वाभिहितो वेदे

सर्वज्ञानमयो हि सः।"

अर्थात, समस्त शास्त्रों का मूल वेद है। वेदों के साथ-साथ वैदिक साहित्य के अन्य सम्पूरक कल्प, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, और ज्योतिष आदि सभी ग्रन्थ वेदांग के अंतर्गत आते हैं। विज्ञान और दर्शन से संबंधित ग्रन्थों में न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, वेदान्त, और मीमांसा वेद के उपाङ्ग हैं। आयुर्वेद, धनुर्वेद, गन्धर्ववेद, और अथर्ववेद वेदों के उपवेद हैं। समस्त उपनिषदें ईषोपनिषद् का विस्तृत रूप हैं। ब्राह्मण ग्रंथ वेदों के ही व्याख्यान ग्रंथ हैं। गृह्यादि श्रौतसूत्र वेद द्वारा निर्दिष्ट कर्मकाण्ड में सहायक ग्रंथ हैं। इस प्रकार, वेदों के अंतर्गत सभी ग्रंथ मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं और शाखाओं को समृद्धि देने के लिए संदर्भित हैं। भारतीय साहित्य एक महान विरासत को दर्शाता है जो वेदों के माध्यम से मानव जीवन के सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहित करती है।

वैदिक दार्शनिक परम्परा

वैदिक दार्शनिक परम्परा भारतीय दर्शन और तत्त्वशास्त्रों की विशेष परंपरा को सूचित करती है, जो वेदों और उनके अनुष्ठान पर आधारित है। इस परम्परा में विभिन्न दर्शनिक सिद्धांत और विचारधाराएं शामिल हैं, जो मानव चिंतन को दिशा देने वाली हैं।

1. न्यायशास्त्र: न्यायशास्त्र विचारशीलता, तर्कशास्त्र, और विवेक के सिद्धांतों पर केंद्रित है। गौतम ऋषि ने इसे प्रमुख रूप से विकसित किया था।

[4] भारतीय दर्शन-चटर्जी एवं पृष्ठ सं 25

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 09, Iss 03, 2020

2. वैशेषिकशास्त्र: कणाद ऋषि ने वैशेषिकशास्त्र को प्रस्तुत किया, जिसमें विशेष प्रकार के पदार्थों की अध्ययन किया जाता है।
3. सांख्यदर्शन: सांख्य दर्शन में कपिल मुनि ने प्रकृति, पुरुष, और मोक्ष के सिद्धांतों का अध्ययन किया है।
4. योगदर्शन: पतंजलि ऋषि ने योगदर्शन को समर्पित किया है, जिसमें मानव चेतना के माध्यम से मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग बताया गया है।
5. मीमांसादर्शन: जैमिनि ऋषि ने मीमांसा दर्शन में वेदों के कर्मकांड के अध्ययन का मार्गदर्शन किया है।
6. उत्तरमीमांसा या वेदान्त: वेदान्त दर्शन में आदि शंकराचार्य ने आत्मा, ब्रह्म, और जगत के अद्वितीयता के सिद्धांतों को विकसित किया है

इन दार्शनिक सिद्धांतों के माध्यम से, वैदिक दार्शनिक परम्परा ने मानव जीवन, तत्त्व, और ब्रह्म के अद्वितीयता की उच्च विचारधारा को प्रवर्तित किया है। यह परम्परा भारतीय साहित्य और दर्शन की अमूल्य धरोहर का हिस्सा है और आज भी इसका प्रभाव महत्वपूर्ण है।[5]

नासदीय सूक्त

१२९वां सूक्त के रूप में जाने जाने वाले ऋग्वेद के १०वें मण्डल का 'नासदीय सूक्त' है। इसे 'नासदीय सूक्त' कहा जाता है क्योंकि इसकी शुरुआत 'नासद्' (न + असद्) से होती है। इस सूक्त का महत्व ब्रह्माण्ड विज्ञान और ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के साथ जुड़ा हुआ है। विद्वानों का मत है कि इस सूक्त में भारतीय तर्कशास्त्र के बीज छिपे हुए हैं।

'नासदीय सूक्त' 'नासदासीन्नो सदासात्तदानीं' से प्रारंभ होता है, जिसका अर्थ है - 'उस समय (अर्थात् सृष्टि की उत्पत्ति से पहले) असत् नहीं था और सत् भी नहीं था।' इस सूक्त

[5] ऋग्वेद 10/129/1

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 09, Iss 03, 2020

में आगे विचार किया जाता है और जिज्ञासा की जाती है कि ब्रह्माण्ड कब, क्यों, और किसके द्वारा अस्तित्व में आया। इसमें अद्वितीयता और आद्यान्त रहितता के अद्वितीय स्वरूप की चर्चा है। इस सूक्त में यह भी उजागर होता है कि इसका निश्चित उत्तर देवताओं को भी नहीं पता है, क्योंकि वे सृष्टि के बाद ही उत्पन्न हुए हैं।[6]

नासदासीन्नो सदासात्तदानीं नासीद्रजो नोव्योमा परोयत्।

किमावरीवः कुहकस्य शर्मन्नंभः किमासीद् गहनंगभीरम् ॥

'नासदीय सूक्त' की शुरुआत 'नासदासीन्नो सदासात्तदानीं' से होती है, जिसका अर्थ है कि उस समय, अर्थात् सृष्टि की उत्पत्ति से पहले, असत् यानी अभावात्मक तत्त्व भी नहीं था। सत्, या भाव तत्त्व, भी नहीं था। रजः, स्वर्गलोक, मृत्युलोक, और पाताल लोक नहीं थे, अन्तरिक्ष नहीं था, और उससे परे जो कुछ है वह भी नहीं था।[7]

न मृत्युरासीदमृतं न तर्हि न रात्र्या अह्न आसीत्प्रकेतः।

अनीद वातं स्वधया तदेकं तस्मादधान्यन्न पर किं च नास ॥

प्रलय कालिक समय में मृत्यु और अमृत दोनों अभाव में थे। रात्री और दिन का ज्ञान भी अभावमय था। उस समय, ब्रह्म तत्व केवल प्राण युक्त, क्रिया से शून्य, और माया सहित एक रूप में विद्यमान था। इस माया संबंधित ब्रह्म से कुछ भी नहीं था और उससे परे भी कुछ नहीं था।

निष्कर्ष

[6] नासदीय (ऋग्वेद 10.129)

[7] हिरण्यगर्भ (ऋग्वेद 10.121)

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 09, Iss 03, 2020

वेदों में दार्शनिक विचार का विकास एक अत्यंत महत्वपूर्ण और गहरा विषय है जो मानव समझ और चिंतन की ऊँचाइयों को दर्शाता है। वेदों के अन्तर्गत विभिन्न शाखाएं और समितियाँ हैं जो विभिन्न दृष्टिकोण और दर्शनों को समर्थन करती हैं। ऋग्वेद से शुरू होकर सामवेद, यजुर्वेद, और अथर्ववेद तक, वेदों में समाहित दार्शनिक भावनाएं और सिद्धांतों ने मानव चिंतन को बहुतंत्री दिशाएं प्रदान की हैं। उनमें से कुछ विचारधाराएं आध्यात्मिकता, कर्मकाण्ड, देवतावाद, रहस्यवाद, और ब्रह्मवाद पर केंद्रित हैं। यह विभिन्न दर्शनशास्त्रों की उत्पत्ति का स्रोत बना है जो भारतीय दार्शनिक परंपरा का हिस्सा बने हैं। वेदों में व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन को संरचित करने, धर्म, और मोक्ष की प्राप्ति के लिए मार्गदर्शन किया गया है। वेदों में समग्र ब्रह्म की एकता, जगत के सृष्टिक्रम में परमात्मा का सत्य, और प्राण या ब्रह्म की उपस्थिति का उद्घाटन किया गया है। वेदों ने सृष्टि, जीवन, और दैहिक-मानसिक स्वास्थ्य के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया है और मानव जीवन को एक सांगड़ी रूप में देखा है। वेदों में दार्शनिक विचार ने मानवता को उच्चतम आदर्शों की दिशा में मार्गदर्शन किया है। यह अनंत ज्ञान, शान्ति, और परम पुरुषार्थ की प्राप्ति के लिए मार्गप्रदर्शन करता है और मानव जीवन को समृद्धि और सामर्थ्य से भर देने का उद्दीपन करता है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 09, Iss 03, 2020

सन्दर्भ-सूची

1. ऋग्वेद 1-89-10
2. वही, 9-108-8
3. ऋग्वेद 1-105-15
4. वही 6-47-1
5. राधाकृष्णन्. इंडियन फिलासफी, भाग 1-2 (PDF).
6. दासगुप्त. हिस्टरी ऑव इंडियन फलासफी, भाग 1
7. भारतीय दर्शन-चटर्जी एवं पृष्ठ सं 25
8. भारतीय दर्शन-चटर्जी एवं पृष्ठ सं 27
9. ऋग्वेद 10/129/1
10. ऋग्वेद 10/121/1
11. https://en.wikipedia.org/wiki/Vedas
12. नासदीय (ऋग्वेद 10.129)
13. हिरण्यगर्भ (ऋग्वेद 10.121)
14. विष्णु (ऋग्वेद 1.154)
15. सामनस्य (अथर्ववेद 3.30)